सत्र: 2024-2025
वार्षिक पाठ्यक्रम संरचना
कक्षा-X
विषय: सामाजिक विज्ञान (विषय कोड-087)

क्रम संख्या	विषय	अंक
I	इतिहासः भारत व समकालीन विश्व–2	20
II	भूगोलः समकालीन भारत–2	20
III	लोकतान्त्रिक राजनीति–2	20
IV	आर्थिक विकास की समझ	20
	कुल	80
	आंतरिक मूल्यांकन	20
पूर्णांक		100

सत्रवार पाठ्य विवरण

पुस्तक का नाम	अध्याय सं. एवं नाम	पाठ्यचर्या संबंधी लक्ष्य	दक्षता	अधिगम संप्राप्ति	सुझावात्मक शैक्षणिक प्रक्रिया
भारत एवं समकालीन विश्व – 2	अध्याय–1 यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय	CG–2 विश्व इतिहास के महत्वपूर्ण चरणों का विश्लेषण करते हैं और वर्तमान दुनिया को समझने के लिए अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हैं। CG –3 एक राष्ट्र के विचार और आधुनिक भारतीय राष्ट्र के उद्भव को समझते हैं।	C–2.4 यूरोप और एशिया में नए विचारों के विकास (मानवतावाद, व्यापारिकता, औद्योगीकरण, उपनिवेशवाद, वैज्ञानिक विकास और अन्वेषण, साम्राज्यवाद, और दुनिया भर में नए राष्ट्र–राज्यों का उदय) की और इसने मानव इतिहास को किस प्रकार प्रभावित किया की व्याख्या करते हैं। C–2.5 C–2.4 में वर्णित उन विभिन्न प्रथाओं (जैसे कि नस्लवाद, दासता, औपनिवेशिक आक्रमण, विजय और लूट, नरसंहार, महिलाओं का लोकतांत्रिक और अन्य संस्थाओं से बहिष्कार), की पहचान करते हैं और इनकी आलोचनात्मक समीक्षा करते हैं। इन सभी ने विश्व इतिहास की दिशा को न सिर्फ प्रभावित किया है बल्कि कभी न भरने वाले घाव छोडे।	➢ राष्ट्र राज्य के निर्माण की प्रक्रिया में फ्रांसीसी क्रांति के यूरोपीय देशों पर पड़ने वाले प्रभावों का पता लगा पाते हैं। ➢ उस समय के विविध सामाजिक आंदोलनों की प्रकृति को समझ सकते हैं। ➢ यूरोप और अन्य जगहों पर राष्ट्र राज्यों के गठन में राष्ट्रवाद के विचार के विकास और कारणों का विश्लेषण और अनुमान लगा सकते हैं। ➢ प्रथम विश्व युद्ध के कारणों का मूल्यांकन कर पाते हैं।	➢ फ्रांसीसी क्रांति से संबंधित एनिमेशन/ फिल्में देखने/ कहानियाँ या उपन्यास पढ़ने के बाद फ्रांसीसी क्रांति पर प्रस्तुति और चर्चा करें। ➢ एक राष्ट्र बनाने के लिए राज्यों के एकीकरण को समझाने के लिए ग्राफिक आयोजकों का उपयोग करें। ➢ मानचित्र गतिविधिः 1815 की वियना कांग्रेस के बाद यूरोप के मानचित्र का अध्ययन और यूरोप के राजनीतिक रेखा मानचित्र पर महत्वपूर्ण स्थलों को अंकित करें। ➢ यूरोप में 1815 के बाद हुए परिवर्तनों पर वर्ल्ड कैफ़े का आयोजन करें। ➢ यूरोप की सामाजिक क्रांतियों का रोल – प्ले करें।
भारत एवं समकालीन विश्व – 2	अध्याय–2 भारत में राष्ट्रवाद	CG –3 एक राष्ट्र के विचार और आधुनिक भारतीय राष्ट्र के उद्भव को समझते हैं।	C–3.2 ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण चरणों की पहचान और विश्लेषण करते हैं, विशेष रूप से महात्मा गांधी और अन्य महत्वपूर्ण हस्तियों के	➢ सामूहिक अपनेपन की भावना को जन्म देने वाले राष्ट्रवादी आंदोलनों के विभिन्न पहलुओं का वर्णन करते हैं। ➢ गांधीजी और अन्य नेताओं द्वारा उनके द्वारा किए गए	➢ सामूहिक अपनेपन की भावना की शुरुआत करने वाले राष्ट्रवादी आंदोलनों के विभिन्न पहलुओं को दर्शाने के लिए अनुक्रम चार्ट/कहानी बोर्ड/कहानी कहने

			नेतृत्व वाले आंदोलन के साथ–साथ उन लोगों के संदर्भ में जिनके कारण आजादी मिली, और विशिष्ट भारतीय अवधारणाओं, मूल्यों को समझते हैं। अन्य तरीकों (जैसे कि स्वराज, स्वदेशी, निष्क्रिय प्रतिरोध, धर्म के लिए लड़ाई, आत्म–बलिदान, अहिंसा आदि) की स्वतंत्रता प्राप्ति में भूमिका का विश्लेषण करते है।	आंदोलनों में लागू की गई रणनीतियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करते हैं। ➢ भारत में दो आंदोलनों (खिलाफत और असहयोग आंदोलन) के उद्भव के परिप्रेक्ष्य में प्रथम विश्व युद्ध के प्रभावों को सारांशित करते हैं।	की शिक्षाशास्त्रीय विधियों का उपयोग करें। ➢ विद्यार्थी पाठ्य सामग्री और अन्य संदर्भों की परख करें और पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुत करें। ➢ गांधीजी और अन्य नेताओं से जुड़ी विभिन्न घटनाओं को दर्शाने वाली फिल्मों / वीडियो क्लिपिंग के प्रासंगिक अंशों को वर्तमान में निष्कर्षों के साथ प्रस्तुत करें।
भारत एवं समकालीन विश्व – 2	**अध्याय–4 औद्योगीकरण का युग** **नोट– इस अध्याय का मूल्यांकन केवल आवधिक / मध्यावधि परीक्षा में किया जाएगा।**	CG–2 विश्व इतिहास के महत्वपूर्ण चरणों का विश्लेषण करते हैं और वर्तमान विश्व को समझने के लिए अंतर्दृष्टि का उपयोग करते हैं।	C–2.4 विश्व में नए विचारों और प्रथाओं (मानवतावाद, व्यापारिकता, औद्योगीकरण, वैज्ञानिक विकास और अन्वेषण, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, नए राष्ट्र– राज्यों का उदय, आधुनिक तकनीकों आदि) के विकास और विश्व इतिहास पर पड़े उनके प्रभावों का वर्णन करते हैं।	➢ औद्योगीकरण से पहले और बाद की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक विशेषताओं पर प्रासंगिक वीडियो / दृश्य / वृत्तचित्र / फिल्म क्लिपिंग आदि को देखते हैं।	➢ औद्योगीकरण से पहले और बाद की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक विशेषताओं की गणना करें। ➢ भारत के विशेष संदर्भ में औद्योगीकरण के औपनिवेशिक कॉलोनियों पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण एवं अनुमान लगाएं।
लोक–तांत्रिक राज–नीति–2	**अध्याय–1 सत्ता की साझेदारी**	CG–5 भारतीय संविधान को समझते हैं और भारतीय लोकतंत्र के सार और लोकतांत्रिक सरकार की विशेषताओं की पड़ताल करते हैं।	C–5.4 भारत में विश्व के इतिहास में लोकतंत्र और लोकतांत्रिक सरकारों की बुनियादी विशेषताओं का विश्लेषण एवं सरकार के अन्य प्रारूपों के साथ इसका तुलनात्मक अध्ययन करते हैं।	➢ लोकतंत्र में सत्ता की साझेदारी की आवश्यकताओं को सूचीबद्ध करते हैं। ➢ सत्ता में प्रभावी साझेदारी सुनिश्चित करने के लिए बेल्जियम और श्रीलंका जैसे देशों के सामने आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण करते हैं। ➢ भारत में सत्ता की साझेदारी के प्रकारों	➢ सत्ता की साझेदारी से संबंधित अखबारों के लेख / कतरन पढ़कर और निष्कर्षों को फ्लो चार्ट के रूप में प्रस्तुत करें। ➢ सत्ता की साझेदारी के विभिन्न रूपों पर चर्चा करें। ➢ सत्ता की साझेदारी की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने में

				का श्रीलंका और बेल्जियम से तुलनात्मक अध्ययन करते हैं। ➢ किसी देश की एकता और स्थिरता को बनाए रखने में सत्ता की साझेदारी के उद्देश्यों को सारांशित करते हैं।	बेल्जियम और श्रीलंका के सामने आने वाली चुनौतियों पर कक्षा में चर्चा करें। ➢ भारत, श्रीलंका और बेल्जियम द्वारा उपयोग की जाने वाली सत्ता साझा करने की तकनीकों पर सुकरात चर्चा विधि का उपयोग करें।
लोक–तांत्रिक राज–नीति–2	**अध्याय–2 संघवाद**	CG–5 भारतीय संविधान को समझते हैं और भारतीय लोकतंत्र के सार और लोकतांत्रिक सरकार की विशेषताओं की परख करते हैं।	C-5.2 भारत को समृद्ध राष्ट्र बनाने में भारतीय संविधान के बुनियादी मूल्यों के महत्व की सराहना करते हैं।	➢ भारत में संघवाद का किस प्रकार अपनाया है इसका सराहना करते है। ➢ उन राजनीतिक नीतियों का विश्लेषण करते हैं जिन्होंनें व्यवहार में संघवाद को मजबूत किया है।	➢ केंद्र और राज्य सरकारों के बीच शक्तियों के वितरण पर समूह चर्चा और विभिन्न माध्यमों से परिणामों को प्रस्तुत करना। ➢ व्यवहार में संघवाद को मजबूत करने वाली राजनीतिक नीतियों पर वाद – विवाद को मांइड मैप के माध्यम से प्रस्तुत करना।
लोक–तांत्रिक राज–नीति–2	**अध्याय – 3 जाति, धर्म और लैंगिक मसले**	CG–6 भारत में सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन को समझते हैं और उसका विश्लेषण करते हैं। साथ ही भारत की अंतर्निहित ऐतिहासिक, लोकाचार और विविधता में एकता के दर्शन एवं इन क्षेत्रों में आने वाली चुनौतियों और प्रयासों को पहचानते हैं। अतीत एवं वर्तमान में इनकों सुलझाने/ सम्भालनें के लिए उठाए गए कदमों से परिचित होते हैं।	C–6.2 अलग–अलग समय पर समाज के विभिन्न वर्गों में असमानता, अन्याय और भेदभाव के रूप (जैसा कि C–6.1 में वर्णित हैं) जो विभिन्न समाजों में विभिन्न समय (आंतरिक और बाहरी ताकतों जैसे उपनिवेशीकरण आदि के कारण), में रहे है को समझते हैं। समानता, समावेशन, न्याय और सद्भाव की दिशा में विभिन्न स्तरों पर चलाए गए राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक प्रयासों, संघर्षों, आंदोलनों और	➢ भारत में लोकतंत्र के व्यवहारिक प्रयोग में लिंग, धर्म और जाति की भूमिका और उसके अंतर की जांच करते हैं। ➢ इनके आधार पर विभिन्न भावों का विश्लेषण करता है। ➢ उपरोक्त वर्णित अंतर लोकतंत्र के लिए स्वस्थ है अथवा नहीं का विश्लेषण कर सकेंगे।	➢ लोकतंत्र में लिंग, धर्म और जाति का अंतर स्वस्थ है अथवा नहीं का प्रहसन/नुक्कड़ नाटक आदि के माध्यम से मूल्यांकन करें। ➢ ग्राफिक विधि का उपयोग करते हुए पता लगाए कि लिंग, धर्म और जाति में अंतर के आधार पर अलग–अलग अभिव्यक्तियाँ लोकतंत्र में स्वस्थ अथवा खराब कैसे हैं एवं इसका निष्कर्ष निकालते

			तंत्रों के अलग–अलग परिणामों और सफलता के प्रतिशत से परिचित होते है।		हुए उनका विश्लेषण करें।
सम–कालीन भारत 2	**अध्याय–1 संसाधन एवं विकास**	CG–4 मनुष्य और उनके भौतिक पर्यावरण के बीच अंतर–संबंध की समझ विकसित करते हैं और यह संबंध कैसे क्षेत्र की आजीविका, संस्कृति और जैव विविधता को प्रभावित करते हैं की समझ विकसित करते हैं।	C–4.4 विभिन्न क्षेत्रों में प्राकृतिक पर्यावरण और मनुष्यों एवं उनकी संस्कृतियों के बीच अंतर–संबंधों का विश्लेषण और मूल्यांकन करते हैं। भारत के संदर्भ में, उन विशेष पर्यावरणीय लोकाचारों जिसके परिणामस्वरूप प्रकृति संरक्षण की प्रथाएं आरंभ हुई का विश्लेषण एवं मूल्यांकन करते हैं।	➢ संसाधन किस प्रकार अन्योन्याश्रित हैं, संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग और भारत में उन्हें विकसित करने की आवश्यकता को उचित ठहराते हुए नियोजन की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं। ➢ संसाधनों के विकास की आवश्यकता का मूल्यांकन करते है। ➢ भारत में भूमि के उपयोग से संबंधित ऑकडों और जानकारी का विश्लेषण और मूल्यांकन करते हैं। ➢ भारत में उपलब्ध सभी संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता और अप्रयुक्त संसाधनों के इष्टतम उपयोग के लिए उपचारात्मक उपायों एवं सुझावों का वर्णन करते है।	➢ संसाधनों की प्रकृति किस प्रकार अन्योन्याश्रित है तथा उन्हें भारत में विकसित करने की आवश्यकता पर मंथन करते हैं तथा वेन आरेख के रूप में प्रस्तुत करें। ➢ भूमि उपयोग के पैटर्न और प्रवृत्तियों की पहचान करने के लिए मानचित्रों, चार्टों और अन्य उपकरणों का उपयोग करें। ➢ क्या विकास संरक्षण के लिए एक विरोधी के रूप में काम कर रहा है' विषय पर केस स्टडी, वाद–विवाद आदि की पीपीटी के रूप में एक रिपोर्ट पेश करें।
सम–कालीन भारत 2	**अध्याय – 2 वन एवं वन्य जीव संसाधन**	CG–4 मनुष्य और उनके भौतिक पर्यावरण के बीच अंतर–संबंध की समझ विकसित करते हैं और यह संबंध कैसे क्षेत्र की आजीविका, संस्कृति और जैव विविधता को प्रभावित करते हैं की समझ विकसित करते हैं।	C–4.6 प्राकृतिक संसाधनों (व्यक्तियों, समाजों और राष्ट्रों द्वारा) के विवेकपूर्ण उपयोग के प्रति संवेदनशीलता विकसित करते हैं और उनके संरक्षण के उपाय सुझाते हैं।	➢ भारत के सतत पोषणीय विकास के लिए वनों और वन्य जीवों के संरक्षण के महत्व और पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में उनकी अन्योन्याश्रितता का परीक्षण करते हैं। विकास और क्षरण में चराई और लकड़ी काटने की भूमिका का विश्लेषण करते हैं और सतत विकास	➢ वनों की कटाई और संरक्षण की आवश्यकता पर अखबारों के लेख पढ़ें/वीडियो देखें और विश्व कैफे गतिविधि के माध्यम से अपने निष्कर्ष को प्रस्तुत कीजिए। ➢ चराई, लकड़ी काटने एवं अन्य विकासात्मक कार्यों ने वनों के अस्तित्व पर अनुकूल अथवा

				के तहत भारत में जैव विविधता के संरक्षण के कारणों को सारांशित करते हैं।	प्रतिकूल प्रभाव डाला है' पर चर्चा करें। ➢ सतत् विकास के तहत भारत में जैव विविधता के संरक्षण के कारणों को सारांशित करते हैं और प्रस्तुत करने के लिए कला एकीकरण आदि गतिविधियों का उपयोग करें।
सम–कालीन भारत 2	**अध्याय–3 जल संसाधन**	CG–4 मनुष्य और उनके भौतिक पर्यावरण के बीच अंतर–संबंध की समझ विकसित करते हैं और यह संबंध कैसे क्षेत्र की आजीविका, संस्कृति और जैव विविधता को प्रभावित करते हैं की समझ विकसित करते हैं।	C–4.2 महत्वपूर्ण भौगोलिक अवधारणाओं, प्रमुख भू–आकृतियों की विशेषताओं, उनकी उत्पत्ति और किसी क्षेत्र के अन्य भौतिक कारकों की व्याख्या करते हैं।	➢ भारत में जल संसाधनों के संरक्षण के कारणों का परीक्षण कर सकते हैं। ➢ बहुउद्देशीय परियोजनाएं भारत में जल की आवश्यकताओं को पूरा कर पा रही है इस विषय का विश्लेषण करते हुए निष्कर्ष निकाल सकते हैं।	➢ पानी की कमी पर चर्चा करने के लिए विचार–मंथन (ब्रेनस्ट्रोर्मिंग) सत्र का आयोजन और ग्राफिक माध्यमों से उनका प्रस्तुतीकरण करें। ➢ भारत की पानी की आवश्यकता का समर्थन करने में बहुउद्देशीय परियोजनाओं की भूमिका का सारांश तैयार करना एवं उनका पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुतीकरण करें।
आर्थिक विकास की समझ	**अध्याय–1 विकास**	CG–8 किसी देश के आर्थिक विकास का मूल्यांकन उसके लोगों के जीवन और प्रकृति पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर करता है।	C–8.1 किसी इलाके, क्षेत्र और राष्ट्रीय स्तर पर आय, पूंजी, गरीबी और रोजगार से संबंधित डेटा एकत्रित करते हैं, समझते हैं एवं उनका विश्लेषण करते हैं। C–8.4 दुनिया की तीन सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने की दिशा में भारत की हालिया राह का वर्णन करते हैं, और प्रत्येक व्यक्ति इस आर्थिक प्रगति में कैसे योगदान दे सकते हैं।	➢ राष्ट्र निर्माण में मदद करने वाले विकासात्मक लक्ष्यों को निर्धारित करने में शामिल विभिन्न प्रक्रियाओं का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकालते हैं। ➢ प्रति व्यक्ति आय देश की आर्थिक स्थिति को कैसे दर्शाती है का विश्लेषण करते हुए निष्कर्ष निकालते हैं। ➢ भारत के योजना आयोग द्वारा राष्ट्र के लिए निर्धारित	➢ राष्ट्र निर्माण में मदद करने वाले विभिन्न विकासात्मक लक्ष्यों की गणना करने के लिए हॉट सीट गतिविधि का उपयोग करें। ➢ प्रति व्यक्ति आय राष्ट्र की आर्थिक स्थिति को कैसे दर्शाती है, इसका विश्लेषण करने और निष्कर्ष निकालने के लिए केस स्टडी करें। ➢ मानव विकास

			C-8.5 आर्थिक विकास और पर्यावरण के बीच संबंध एवं जीडीपी वृद्धि और आय से परे सामाजिक भलाई जैसे व्यापक संकेतकों की सराहना करते हैं।	विकास लक्ष्यों का मूल्यांकन (उनकी प्रभावकारिता, कार्यान्वयन रणनीतियों, राष्ट्र की वर्तमान आवश्यकताओं की प्रासंगिकता के विशिष्ट संदर्भ में) करते हैं। ➢ कुछ देशों की प्रति व्यक्ति आय की तुलना करें और भिन्नता के कारणों का अनुमान लगाते हैं। ➢ विकास की आवश्यकता पर अनेक दृष्टिकोणों का विश्लेषण करता है।	सूचकांक और प्रति व्यक्ति आय के बीच संबंध का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए ग्राफिक प्रस्तुतीकरण करें। ➢ विकास की जरूरत पर कई दृष्टिकोणों का विश्लेषण करने के लिए भाषण प्रतियोगिता का आयोजन करें। ➢ 'स्वास्थ्य और शिक्षा विकास के सच्चे संकेतक हैं' विषय पर वाद – विवाद का आयोजन करें।
आर्थिक विकास की समझ	**अध्याय–2 भारतीय अर्थव्यव–स्था के क्षेत्रक**	CG–7 भारत के विशिष्ट संदर्भ में, किसी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की समझ विकसित करते हैं।	C–7.1 अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं जैसे उत्पादन, वितरण, मांग, आपूर्ति, व्यापार और वाणिज्य (प्रौद्योगिकी सहित) और अन्य कारक जो इन पहलुओं को प्रभावित करते हैं को परिभाषित करते हैं। C –7.2 किसी भी देश की अर्थव्यवस्था (भारत के विशेष संदर्भ) में उत्पादन के तीन क्षेत्रकों (प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक) के महत्व का मूल्यांकन करते हैं। C–7.3 अर्थव्यवस्था के 'असंगठित' और 'संगठित' क्षेत्रकों और छोटे, मध्यम और बड़े पैमाने के उत्पादन केंद्रों (उद्योगों) में स्थानीय बाजार के लिए उत्पादन में उनकी भूमिका के बीच	➢ विभिन्न क्षेत्रकों में आर्थिक गतिविधियों का, भारतीय अर्थव्यवस्था की समग्र वृद्धि और विकास में योगदान का विश्लेषण करते हैं। ➢ विभिन्न क्षेत्रों में पहचानी गई समस्याओं का अपनी समझ के आधार पर समाधान प्रस्तावित करते हैं। ➢ संगठित और असंगठित क्षेत्र किस प्रकार रोजगार प्रदान कर रहे हैं और उनके सामने क्या चुनौतियाँ हैं? का संक्षेप में वर्णन करते हैं। ➢ वर्तमान में पीसीआई (प्रति व्यक्ति आय) को प्रभावित करने में असंगठित क्षेत्र की भूमिका का वर्णन करता है और	➢ विभिन्न आँकडों का सकल घरेलू उत्पाद तथा निवल घरेलू उत्पाद में उनके योगदान का विश्लेषण करें। ➢ विभिन्न क्षेत्रकों में उनकी समझ के आधार पर चिन्हित समस्याओं के समाधान को प्रस्तावित करने के लिए अनुसंधान आधारित रणनीति का उपयोग करें। ➢ संगठित और असंगठित क्षेत्रक रोज़गार कैसे प्रदान कर रहे हैं और उनके सामने आने वाली चुनौतियों को सारांशित करने के लिए समाचार पत्रों के लेखों को पढें एवं समूह में चर्चा कीजिए। ➢ अल्परोज़गारी / प्रच्छन्न बेरोज़गारी

			अंतर करते हैं, और विशेषताओं को पहचानते हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में तथाकथित 'असंगठित' क्षेत्रक का महत्व और भारतीय समाज की स्व–संगठित विशेषताओं के साथ इसके संबंध की पहचान करते हैं।	➢ सकल घरेलू उत्पाद में अधिक उत्पादक योगदान के लिए असंगठित क्षेत्रक को कम करने के लिए विचारोत्तेजक कदमों का प्रस्ताव करते हैं। ➢ सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों की आवश्यक भूमिका की गणना करते हैं।	की व्याख्या करने वाले केस अध्ययनों का रोल –प्ले करें। ➢ अधिक रोजगार कैसे सृजित करें इस पर कक्षा वार्तालाप/समूह चर्चा करें।

नोट:

- ❖ उपरोक्त वर्णित पाठ्यक्रम 13 सितम्बर 2024 तक पूर्ण कीजिए।
- ❖ **मध्यावधि परीक्षा के लिए पुनरावृत्ति**।

मध्यावधि परीक्षा 2024

पुस्तक का नाम	अध्याय सं. एवं नाम	पाठ्यचर्या संबंधी लक्ष्य	दक्षता	अधिगम संप्राप्ति	सुझावात्मक शिक्षण/ शैक्षणिक प्रक्रिया
भारत एवं समकालीन विश्व – 2	**अध्याय–3 भूमंडलीकृत विश्व का बनना** **उपविषय 1 आधुनिक विश्व से पहले (उपविषय 1 से 1.3 तक का मूल्यांकन वार्षिक परीक्षा में किया जाएगा।)** **अंतःविषयी परियोजना हेतु** **उपविषय 2 उन्नीसवीं शताब्दी 1815–1914** **उपविषय 3 महायुद्धों के बीच अर्थव्यवस्था** **उपविषय 4 विश्वयुद्ध के बाद विश्व अर्थव्यवस्था का बनना** **अंतर अनुशासना–त्मक परियोजनाः** • भूगोल के अध्याय 7 के साथ राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएं, और • अर्थशास्त्र का अध्याय 4 वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था	CG–7 भारत के विशिष्ट संदर्भ में, किसी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की समझ विकसित करते हैं।	C–2.3 विश्व इतिहास (सांस्कृतिक रुझान, सामाजिक और धार्मिक सुधार, और आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन) के विभिन्न चरणों में निरंतरता और परिवर्तन के पहलुओं का पता लगाते हैं। C –7.4 एक देश और दूसरे देश के बीच बड़े पैमाने पर व्यापार और वाणिज्य (ई–कॉमर्स सहित) की शुरुआत और महत्व का पता लगाते हैं। – आंरभ में व्यापार की प्रमुख वस्तुएं और इनमें समय–समय पर होने वाले बदलावों का पता लगाते हैं। अनुलग्नक IV देखें	➢ वह परिवर्तन जिन्होंने अर्थव्यवस्था, राजनीतिक, सांस्कृतिक और तकनीकी क्षेत्रों के संदर्भ में दुनिया को बदल दिया को सारांशित करते हैं। ➢ पूर्व आधुनिक से लेकर आज तक वैश्विक अंतर्संबंध को चित्रित करते हैं। ➢ उपनिवेशित लोगों की आजीविका पर उपनिवेशवाद के विनाशकारी प्रभाव की गणना करते हैं। ➢ अनुलग्नक IV देखें	➢ विश्व कैफे की गतिविधि का उपयोग करके एक पूछताछ आधारित कक्षा आरंभ करें, और प्रत्येक क्षेत्र की कैफे वार्तालाप रणनीति के माध्यम से अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करें। (अर्थव्यवस्था, राजनीतिक, सांस्कृतिक और तकनीकी पहलुओं के संदर्भ में दुनिया को किस प्रकार बदल दिया।) ➢ अंतःसंबंधों को चित्रित करने के लिए कला एकीकरण और गैलरी वॉक। ➢ फोटोग्राफिक डिस्प्ले/नई पेपर कटिंग की जांच करना जो उपनिवेशवाद के विनाशकारी प्रभाव को उपनिवेशित लोगों की आजीविका पर दर्शाते हैं और न्यूजलेटर/कार्टून स्ट्रिप्स/इंटर डिसिप्लिनरी प्रोजेक्ट के रूप में अपनी समझ प्रस्तुत करते हैं।

भारत एवं समकालीन विश्व – 2	**अध्याय–5 : मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया**	CG–2 विश्व इतिहास के महत्वपूर्ण चरणों का विश्लेषण करते हैं और वर्तमान विश्व को समझने के लिए अंतर्दृष्टि का उपयोग करते हैं। CG–9 सामाजिक विज्ञान के विस्तृत क्षेत्र और इसके उपविषयों के निर्माण में भारत के योगदान (इतिहास एवं वर्तमान में) को समझते हैं और उसकी सराहना करते हैं।	C –2.4 विश्व में नए विचारों और प्रथाओं (मानवतावाद, व्यापारिकता, औद्योगीकरण, वैज्ञानिक विकास और अन्वेषण, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, नए राष्ट्र– राज्यों का उदय, आधुनिक तकनीकों आदि) के विकास और विश्व इतिहास पर पड़े उनके प्रभावों का वर्णन करते हैं।	➢ पूर्वी एशिया में इसकी शुरुआत से लेकर यूरोप और भारत में इसके विस्तार तक मुद्रण के विकास यात्रा की गणना करते हैं। ➢ इस कथन पर टिप्पणी करते है कि मुद्रण क्रांति केवल पुस्तक निर्माण का एक तरीका नहीं था बल्कि लोगों के गहन परिवर्तन का जरिया थी। ➢ हस्तलिखित पांडुलिपियों की पुरानी परंपरा तथा मुद्रण प्रौद्योगिकी का तुलनात्मक अध्ययन करता है। ➢ मुद्रण क्रांति की भूमिका और उसके प्रभावों को सारांशित करता है।	➢ मुद्रण के विकास को दर्शाने के लिए फ्लो चार्ट बनाएँ। ➢ मुद्रण क्रांति से लोगों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन करें। ➢ हस्तलिखित पुस्तकों और मुद्रित पुस्तकों के लाभों की तुलना करने के लिए वेन आरेख का उपयोग करें। ➢ मुद्रण संस्कृति के साथ – साथ महत्वपूर्ण घटनाओं और मुद्दों पर चित्रों, कार्टूनों, प्रचार साहित्य (प्रोपेगंडा) के अंशों से विश्लेषण करके निष्कर्ष निकालें।
लोक–तांत्रिक राज–नीति–2	**अध्याय – 4 राजनीतिक दल**	CG–5 भारतीय संविधान को समझते हैं और भारतीय लोकतंत्र के सार और लोकतांत्रिक सरकार की विशेषताओं की पड़ताल करते हैं।	C–5.3 मौलिक अधिकार सबसे बुनियादी मानव अधिकार हैं, और वे तभी फलते–फूलते हैं जब लोग अपने मौलिक कर्तव्यों का पालन करते हैं।	➢ राजनीतिक दलों के निर्वाचित होने की प्रक्रिया को समझते है। ➢ मतदान के अधिकार के महत्व को जानते हैं और राष्ट्र के नागरिक के रूप में कर्तव्यों का पालन करते हैं। ➢ लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की भूमिका, उद्देश्य और संख्या की परख करते है। ➢ लोकतंत्र में राष्ट्रीय और क्षेत्रीय राजनीतिक दलों द्वारा किए गए योगदान को न्योयचित ठहराता है।	➢ चुनावी प्रक्रिया सीखने/ सिखाने के लिए मॉक चुनाव। ➢ मौलिक कर्तव्यों के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए रोल – प्ले करें। ➢ राजनीतिक दलों की भूमिका, उद्देश्य और संख्या को समझने के लिए फ्लो चार्ट का उपयोग करें। ➢ भारतीय लोकतंत्र को सफल बनाने में राष्ट्रीय और क्षेत्रीय राजनीतिक दलों द्वारा दिए गए योगदान के संदर्भ में समाचार पत्रों को पढतें एवं वीड़ियो को देखें।

लोक–तांत्रिक राज–नीति–2	**अध्याय–5 लोकतंत्र के परिणाम**	CG–5 भारतीय संविधान को समझते हैं और भारतीय लोकतंत्र के सार और लोकतांत्रिक सरकार की विशेषताओं की पड़ताल करते हैं।	C–5.5 एक लोकतांत्रिक सरकार और समाज के कामकाज में गैर–राज्य और गैर–बाजार प्रतिभागियों (जैसे कि मीडिया, नागरिक समाज, सामाजिक–धार्मिक संस्थाएँ, और सामुदायिक संस्थाएँ) की महत्वपूर्ण भूमिका का विश्लेषण करते है।	➢ लोकतंत्र की सफलता के विभिन्न कारकों (सरकार की गुणवत्ता, आर्थिक भलाई, समानता, सामाजिक अंतर, संघर्ष, स्वतंत्रता और गरिमा आदि) का विश्लेषण करते हैं।	➢ लोकतंत्र की सफलता के विभिन्न कारकों (सरकार की गुणवत्ता, आर्थिक भलाई, समानता, सामाजिक अंतर, संघर्ष, स्वतंत्रता और गरिमा आदि) पर किस प्रकार निर्भर करती है, का ग्राफिक द्वारा प्रस्तुतीकरण करें।
सम–कालीन भारत 2	**अध्याय–4 कृषि**	CG–4 मनुष्य और उनके भौतिक पर्यावरण के बीच अंतर–संबंध की समझ विकसित करते हैं और यह संबंध कैसे क्षेत्र की आजीविका, संस्कृति और जैव विविधता को प्रभावित करते हैं की समझ विकसित करते हैं।	C–4.3 भौतिक पर्यावरण के विभिन्न घटकों के बीच अंतर–संबंध बनाते हैं, जैसे जलवायु और उच्चावाच, जलवायु और वनस्पति, वनस्पति और वन्य जीवन आदि।	➢ हमारे समाज एवं अर्थव्यवस्था में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका की परख करते हैं। ➢ भारतीय कृषक समुदाय के समाने आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण करते हैं। ➢ कृषि के विभिन्न आयामों जैसेः कृषि उत्पादन, कृषि के प्रकार, आधुनिक कृषि की प्रक्रिया एवं कृषि के पर्यावरण पर प्रभावों को समझते हैं। ➢ कृषि पद्धतियाँ, और पर्यावरण पर कृषि का प्रभाव। ➢ भारतीय किसानों को होने वाली समस्याओं का विश्लेषण करते हैं।	➢ किसानों के सामने आने वाली महत्वपूर्ण चुनौतियों जैसेः कम उत्पादन, सिंचाई के साधनों का अभाव, कृषि के आधुनिक साधनों का अभाव, उत्पादन के बाद कृषि उत्पादों के नुकसान पर समूह चर्चा एवं उनका पीपीटी द्वारा प्रदर्शन करें। ➢ भारतीय किसानों को होने वाली समस्याओं से संबंधित समाचार पत्र एवं पैनल चर्चा का आयोजन करें। ➢ ग्राफिक आयोजकों के द्वारा परंपरागत एवं आधुनिक कृषि पद्वितयों का वर्णन करें।
सम–कालीन भारत 2	**अध्याय–5 खनिज तथा उर्जा संसाधन**	CG–4 मनुष्य और उनके भौतिक पर्यावरण के बीच अंतर–संबंध की समझ विकसित करते हैं और यह संबंध कैसे क्षेत्र की आजीविका, संस्कृति और जैव विविधता को	C–4.6 प्राकृतिक संसाधनों (व्यक्तियों, समाजों द्वारा) के विवेकपूर्ण उपयोग के प्रति संवेदनशीलता विकसित करते हैं , और उनके संरक्षण के लिए उपाय सुझाते हैं।	➢ ऊर्जा के पारंपरिक और गैर पारंपरिक स्रोतों के बीच अंतर करते हैं। ➢ देश के आर्थिक विकास के लिए खनिजों और प्राकृतिक संसाधनों के महत्व का विश्लेषण	➢ दुनिया की वास्तविक परिस्थितियों में संसाधन वितरण और प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग के लिए गतिविधियाँ प्रस्तावित करें। ➢ ऊर्जा के पारंपरिक और गैर–पारंपरिक

		प्रभावित करते हैं की समझ विकसित करते हैं।		करते हैं। ➢ प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग के लिए रणनीतियों का सुझाव देते हैं।	स्रोतों के बीच अंतर करने के लिए फ्लो चार्ट का उपयोग करें।
सम–कालीन भारत 2	**अध्याय–6 विनिर्माण उद्योग**	CG–4 मनुष्य और उनके भौतिक पर्यावरण के बीच अंतर–संबंध की समझ विकसित करते हैं और यह संबंध कैसे क्षेत्र की आजीविका, संस्कृति और जैव विविधता को प्रभावित करते हैं।	C–4.5 जलवायु परिवर्तन सहित पर्यावरण पर मानवीय हस्तक्षेपों के प्रभाव का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते है। प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों की कमी (विशेष रूप से पानी), और जैव विविधता का नुकसान आदि एवं उन प्रथाओं की पहचान करते हैं जिनके कारण ये पर्यावरणीय संकट पैदा हुए हैं और उन्हें दूर करने के लिए किए जाने वाले उपायों की समीक्षा करते हैं।	➢ पर्यावरण पर विनिर्माण उद्योगों के प्रभाव का परीक्षण एंव विनिर्माण क्षेत्र के सतत विकास की रणनीति का बनाते हैं।. ➢ विभिन्न प्रकार के विनिर्माण उद्योगों के बीच उनकी इनपुट सामग्री, प्रक्रियाओं और अंतिम उत्पादों के आधार पर अंतर करना और भारतीय अर्थव्यवस्था में उनके महत्व का विश्लेषण करते हैं। ➢ कच्चे माल की उपलब्धता और उद्योगों के स्थान के बीच संबंधों का विश्लेषण करते हैं।	➢ विभिन्न प्रकार के विनिर्माण उद्योगों के बीच उनके कच्चे माल, प्रक्रियाओं और अंतिम उत्पादों के आधार पर अंतर करने के लिए फ्लो चार्ट का उपयोग करें। ➢ पर्यावरण पर विनिर्माण उद्योगों के प्रभाव की गणना करने और विनिर्माण क्षेत्र के सतत विकास के लिए रणनीति विकसित करने के लिए पाठ्य सूचना (विभिन्न मानचित्रों/ग्राफों के माध्यम से दिए गए डेटा) का उपयोग करें। ➢ कच्चे माल की उपलब्धता और उद्योग के स्थान के बीच संबंध का अनुमान लगाने के लिए केस स्टडी का उपयोग करें।
सम–कालीन भारत 2	**अध्याय–7 राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ केवल मानचित्र कार्य का मूल्यांकन वार्षिक परीक्षा में किया जाएगा।**		• **अंतर–विषयक प्रोजेक्ट:** इतिहास अध्याय 3 भूमंडलीकृत विश्व का बनना अर्थशास्त्र 4 वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था	• अनुलग्नक IV देखें	• अनुलग्नक IV देखें।

आर्थिक विकास की समझ	**अध्याय–3 मुद्रा और साख**	CG–8 किसी देश के आर्थिक विकास का मूल्यांकन उसके लोगों के जीवन और प्रकृति पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर करते हैं।	C–8.1 किसी इलाके, क्षेत्र और राष्ट्रीय स्तर पर आय, पूंजी, गरीबी और रोजगार से संबंधित आँकड़े एकत्रित करते हैं, समझते हैं एवं उनका विश्लेषण करते हैं। C–8.3 प्राचीन भारत के संदर्भ में आंतरिक और बाह्य दोनों तरह की उन व्यापार प्रक्रियाओं, रीतियों, सम्मेलनों को समझते है, जिन्होनें भारत को औपनिवेशिक काल तक अग्रणीय अर्थव्यवस्थाओं में से एक बना रखा था।	➢ प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक वस्तुओं और सेवाओं के सभी लेन–देन में मुद्रा किस प्रकार माध्यम विनिमय के रूप में कार्य करती है। ➢ ऋण के विभिन्न स्रोतों का विश्लेषण करते हैं। ➢ ग्रामीण लोगों/महिलाओं की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने में स्वयं सहायता समूहों के महत्व और भूमिका का सारांश प्रस्तुत करते हैं।	➢ प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक वस्तुओं और सेवाओं के सभी लेन–देन में मुद्रा एक माध्यम के रूप में किस प्रकार की भूमिका निभाती है का समूह में चर्चा करके उसका विश्लेषण करें एवं निष्कर्ष निकालें। ➢ ऋण के विभिन्न स्रोतों का विश्लेषण और अनुमान के लिए केस आधारित अध्ययन करें। ➢ ग्रामीण लोगों/महिलाओं की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने में स्वयं सहायता समूहों के महत्व और भूमिका को सारांशित करवाना जिसके लिए अतिथि वक्ता के रूप में (बैंक प्रबंधक/स्वंय सहायता समूह आदि) किसी सदस्य को आमंत्रित करें।
आर्थिक विकास की समझ	**अध्याय–4 वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था** **नोटः निम्नलिखित उपविषयों का ही मूल्यांकन बोर्ड परीक्षा में किया जाएगा।** **उपविषय वैश्वीकरण क्या है?**	CG–7 भारत के विशिष्ट संदर्भ में, किसी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की समझ विकसित करते हैं। CG–8 किसी देश के आर्थिक विकास का मूल्यांकन उसके लोगों के जीवन और प्रकृति पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर करते हैं।	C –7.4 एक देश और दूसरे देश के बीच बड़े पैमाने पर व्यापार और वाणिज्य (ई–कॉमर्स सहित) की शुरुआत और महत्व का पता लगाते हैं। – आंरभ में व्यापार की प्रमुख वस्तुएं और इनमें समय–समय पर होने वाले बदलावों का पता लगाते हैं। C–8.3 प्राचीन भारत के संदर्भ में आंतरिक और बाह्य दोनों तरह की उन व्यापार प्रक्रियाओं, रीतियों,	➢ वैश्वीकरण की अवधारणा और इसकी परिभाषा, विकास, और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभावों की व्याख्या करते है। ➢ वैश्वीकरण के प्रमुख घटकों जैसे संचार और परिवहन प्रौद्योगिकी में प्रगति, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का विकास, और विश्व व्यापार संगठन जैसे संस्थानों की भूमिका का विश्व के अन्य देशों के	➢ वैश्वीकरण से संबंधित वीडियों को दिखाना तथा एक समूह चर्चा के माध्यम से वैश्वीकरण को पभिाषित करना, उसके विकास और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर उसके प्रभावों का विश्लेषण करना। ➢ वैश्वीकरण के प्रमुख घटको और वैश्विक आर्थिक परिदृश्य को आकार देने में उनकी भूमिका का विश्लेषण और निष्कर्ष निकालने के लिए

	वैश्वीकरण के प्रमुख घटक **उपविषय** **विभिन्न देशों में उत्पादन** **भारत में चीन के खिलौनें एवं विश्व व्यापार संगठन** **न्यायसंगत वैश्वीकरण के लिए संघर्ष**		सम्मेलनों को समझते है, जिन्होनें भारत को औपनिवेशिक काल तक अग्रीण अर्थव्यवस्थाओं में से एक बना रखा था। अनुलग्नक IV देखें	आर्थिक परिदृश्य पर पड़े प्रभावों को अन्वेषण कर सकते हैं। ➢ G 20 में भारत की वर्तमान भूमिका एवं इसके महत्व का परीक्षण कर सकेंगे।	पाठ्य और अन्य संसाधनों का अध्ययन करना। ➢ वैश्वीकरण का लोगों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पर चर्चा/बहस का आयोजन करें।

नोट :

- ❖ उपरोक्त वर्णित पाठ्यक्रम 13 दिसम्बर 2024 तक पूर्ण कीजिए।
- ❖ वार्षिक परीक्षा हेतु पाठयक्रम की पुनरावृत्ति।
- ❖ वार्षिक परीक्षा में संपूर्ण पाठ्यक्रम का मूल्यांकन किया जाएगा।

वार्षिक परीक्षा

कक्षा X

मानचित्र प्रश्न से संबंधित विषय–वस्तु

विषय	अध्याय का नाम	मानचित्र कार्य
इतिहास	भारत में राष्ट्रवाद	**1. भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस का अधिवेशन** • कलकत्ता (सितम्बर 1920) • नागपुर (दिसम्बर 1920) • मद्रास (1927) **2. सत्याग्रह आंदोलन** • खेड़ा • चम्पारण • अहमदाबाद मिल आंदोलन **3. जलियाँवाला बाग** **4. डांडी यात्रा**
भूगोल	संसाधन और विकास	**केवल पहचानना** मृदा के मुख्य प्रकार
भूगोल	जल संसाधन	**(केवल ढूंढना और चिन्हित करना)** • सलाल • भाखड़ा नांगल • टिहरी • राणा प्रताप सागर • सरदार सरोवर • हीराकुंड • नागार्जुन सागर • तुंगभद्रा
भूगोल	कृषि	**(केवल पहचानना)** • चावल और गेहूँ के मुख्य उत्पादक क्षेत्र। • गन्ना, चाय, कॉफी, रबड़, कपास और पटसन के मुख्य उत्पादक राज्य।
भूगोल	खनिज और ऊर्जा संसाधन	**खनिज (केवल पहचानना)** **लौह अयस्क खाने** • मयूरभंज • दुर्ग • बेलाडिला • बल्लारी • कुद्रेमुख **कोयले की खानें** • रानीगंज • बोकारो • तलचर • नेवेली। **तेल क्षेत्र** • डिगबोई

		• नहरकटिया • मुंबई हाई • बेसीन • कलोल • अंकलेश्वर **ऊर्जा केन्द्र (ढूँढना और चिन्हित करना)** **तापीय केन्द्र** • नामरूप • सिंगरौली • रामागुडम **आणविक केन्द्र** • नरोरा • काकरापारा • तारापुर • कलपक्कम
भूगोल	**विनिर्माण उद्योग**	**(ढूँढना और चिन्हित करना)** **सूती कपड़ा वस्त्र उद्योग** मुंबई, इंदौर, सूरत, कोयम्बटूर, कानपुर **लौह एवं स्टील प्लांट** दुर्गापुर, बोकारों, जमशेदपुर, भिलाई, विजयनगर, सलेम **सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क** : नोएडा, गाँधीनगर, मुंबई, पुणे, हैदराबाद, बंगलौर, चेन्नई, तिरूवनंतपुरम।
भूगोल	**राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ**	**मुख्य पतन** • कांडला • मुंबई • मार्मागाओं • न्यू मंगलौर • कोच्चि • तूतीकोरिन • चेन्नई • विशाखापट्नम् • पाराद्वीप • हल्दिया **अंतर्राष्ट्रीय हवाई पत्तन** • अमृतसर (राजा सांसी – श्री गुरू रामदास जी) • दिल्ली (इंदिरा गाँधी) • मुंबई (छत्रपति शिवाजी) • चेन्नई (मीनाम्बकम) • कोलकाता (नेताजी सुभाषचंद्र बोस) • हैदराबाद (राजीव गाँधी)
(नोटः ढूँढने और चिन्हित करने वाले स्थान, पहचान करने के लिए भी पूछा जा सकता है।)		

Weightage to Type of Questions

Type of Questions	Marks (80)	Percentage
1 Mark MCQs (20x1) (Inclusive Of Assertion, Reason, Differentiation &Stem)	**20**	**25%**
2 Marks Narrative Questions (4x2) (Knowledge, Understanding, Application, Analysis, Evaluation ,Synthesis & Create)	**8**	**10%**
3 Marks Narrative Questions (5x3) (Knowledge, Understanding, Application, Analysis, Evaluation, Synthesis & Create)	**15**	**18.75%**
4 MARKS Case Study Questions (3x4) (Knowledge, Understanding, Application, Analysis, Evaluation n, Synthesis & Create)	**12**	**15%**
5 Mark Narrative Questions (4x5) (Knowledge, Understanding, Application, Analysis, Evaluation, Synthesis & Create)	**20**	**25%**
Map Pointing	**5**	**6.25%**

Weightage to Type of Questions

Weightage to Competency Levels

Sr. No.	Competencies	Marks (80)	Percentage
1	Remembering and Understanding: Exhibiting memory of previously learned material by recalling facts, terms, basic concepts, and answers; Demonstrating understanding of facts and ideas by organizing, translating, interpreting, giving descriptions and stating main ideas.	**24**	**30%**
2	Applying: Solving problems to new situations by applying acquired knowledge, facts, techniques and rules in a different way.	**11**	**13.25%**
3	Formulating, Analysing, Evaluating and Creating: Examining and breaking information into parts by identifying motives or causes; Making inferences and finding evidence to support generalizations; Presenting and defending opinions by making judgments about information, validity of ideas, or quality of work basedon a set of criteria; Compiling information together in a different way by combining elements in a new pattern or proposing alternative solutions.	**40**	**50%**
4	Map Skill	**5**	**6.25%**
	Total	**80**	**100**

अनुलग्नक III
परियोजना कार्य
कक्षा X 2023–2024

प्रत्येक विद्यार्थी को निम्नलिखित में से किसी **एक विषय पर परियोजना कार्य** करना होगा। **उपभोक्ता आंदोलन** **अथवा** **सामाजिक मुद्दे** **अथवा** **सतत् पोषणीय विकास** **उद्देश्यः** उपभोक्ता जागरूकता पर परियोजना कार्य देने का मुख्य उद्देश्य है– • परियोजना कार्य का समग्र उद्देश्य विद्यार्थियों को विषय की गहन एवं व्यावहारिक समझ प्राप्त करने में सहायता करना तथा सभी सामाजिक विज्ञान विषयों को अंतः विषयक परिप्रेक्ष्य से देखने में सहायता करना है। • परियोजना कार्य को छात्रों के जीवन कौशल को बढ़ाने में भी मदद करनी चाहिए। • विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे परियोजना रिपोर्ट तैयार करते समय वर्षों से सीखी गई सामाजिक विज्ञान की अवधारणाओं का उपयोग करें। • परियोजना कार्य को तैयार करते समय यदि आवश्यक हो तो विद्यार्थी आंकड़े एकत्र करने प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग करें। • जहाँ भी संभव हो परियोजना कार्य को विभिन्न कलाओं के साथ एकीकृत करें।	विद्यार्थी निम्नलिखित दक्षताओं का विकास करेंगेः • आपसी सहयोग • विश्लेषणात्मक दक्षताएँ • आपदाओं के दौरान स्थितियों का मूल्यांकन • सूचना का संश्लेषण • रचनात्मक समाधान • समाधान के क्रम में रणनीतियाँ • सही संचार कौशल का प्रयोग

दिशानिर्देशः

अपेक्षित उद्देश्यों को पूरी तरह से प्राप्त करने के लिए, प्राचार्यों/शिक्षकों को विभिन्न स्थानीय प्राधिकरणों और संगठनों जैसे आपदा प्रबंधन प्राधिकरणों, राहत, पुनर्वास और राज्यों के आपदा प्रबंधन विभागों, जिला मजिस्ट्रेट के कार्यालय / उपायुक्त, अग्निशमन सेवा, पुलिस, नागरिक सुरक्षा आदि से समर्थन जुटाना आवश्यक होगा। उस क्षेत्र में जहां स्कूल स्थित हैं।

1. **परियोजना कार्य से संबंधित विभिन्न आयामों में अंक विभाजन निम्नलिखित प्रकार से हैंः–**

क्र. संख्या	आयाम	अंक
1.	विषय की सटीकता, मौलिकता तथा विश्लेषण	2
2.	प्रस्तुतीकरण एवं रचनात्मकता	2
3.	मौखिक परीक्षा	1

2. विद्यार्थी विभिन्न विषयों पर परियोजना कार्य करें तथा उसके उपरांत् विभिन्न अंतः क्रियात्मक सत्रों (जैसे प्रदर्शनी, पैनल चर्चा आदि) के माध्यम से कक्षा के साथ साझा करें।
3. इस गतिविधि के अंतर्गत मूल्यांकन से संबंधित सभी कागजात संबंधित विद्यालय के द्वारा सूक्ष्मतापूर्वक संभाल कर रखा जाना चाहिए।
4. निम्नलिखित को प्रदर्शित करते हुए परियोजना कार्य की संक्षिप्त रिपोर्ट तैयार की जानी चाहिएः

- व्यक्तिगत अथवा सामूहिक अन्तर्क्रिया का उद्देश्य
- क्रियाकलाप की तारीख
- इस प्रक्रिया में उत्पन्न नये विचार
- मौखिक अभिव्यक्ति में पूछे गए प्रश्न

5. सभी शिक्षक और विद्यार्थी इस बात का ध्यान रखें कि परियोजना कार्य अथवा मॉडल बनाने में पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों का इस्तेमाल हो तथा उसका लागत मूल्य कम से कम हो।
6. परियोजना रिपोर्ट विद्यार्थियों द्वारा हस्त लिखित अथवा डिजिटल हो सकती है।
7. परियोजना कार्य के द्वारा शिक्षार्थियों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और मनो प्रेरणा कौशल को बढ़ाने की आवश्यकता है। इसमें शिक्षक मूल्यांकन के साथ – साथ स्व – मूल्यांकन एवं सहपाठी मूल्यांकन तथा परियोजना – आधारित और पूछताछ – आधारित शिक्षा, कला एकीकृत गतिविधियाँ, प्रयोग, मॉडल, क्विज, रोल– प्ले, समूह कार्य, पोर्टफोलियो आदि में विद्यार्थियों की प्रगति शामिल होगी। (एनइपी 2020)
8. परियोजना कार्य में पावर पाइंट प्रजेंटेशन, प्रदर्शनी, प्रहसन, एल्बम,फाइल/गीत एवं नृत्य अथवा सांस्कृतिक कार्यक्रम/ कहानी कहना/वाद–विवाद/पैनल संवाद, पेपर प्रस्तुतीकरण आदि जो भी दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सहज हो उसे शामिल करें।
9. परियोजना से संबंधित रिकॉर्ड परीक्षा परिणाम की तिथि से कम से कम तीन महीने तक रखा जाएगा ताकि बोर्ड इसकी जाँच कर सके। हालांकि न्यायिक विचाराधीन अथवा सूचना के अधिकार अधिनियम से जुड़े हुए मामलों में यह रिकॉर्ड तीन महीनों से भी अधिक समय तक संभाल कर रखा जा सकता है।

अंतविषयी परियोजना कार्य कक्षा 10

विषय एवं अध्याय सं.	**अध्याय का नाम**	**सुझावात्मक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया**	**विशिष्ट दक्षताओं के साथ अधिगम परिणाम**	**पूरा करने के लिए समय अनुसूची**
भारत एवं समकालीन विश्व –I: अध्याय 3	भूमंडलीकृत विश्व का बनना	अंतर्विषयी परियोजना को पूरा करने में छात्रों की सुविधा के लिए शिक्षक निम्नलिखित शिक्षाशास्त्र का उपयोग कर सकते हैं: 1) रचनावाद 2) पूछताछ आधारित शिक्षा 3) सहकारी शिक्षा 4) लर्निंग स्टेशन 5) सहयोगी शिक्षा अधिगम 6) वीडियो/ दृश्य/ वृत्तचित्र/ फिल्म क्लिपिंग्स 7) हिंडोला गतिविधि 8) कला समेकित अधिगम 9) समूह चर्चाएँ **बहुआयामी आकलन** सर्वेक्षण/ साक्षात्कार/ शोध कार्य/ अवलोकन/ कहानी आधारित प्रस्तुति/ कला समेकित/ प्रश्नोत्तरी/ वाद-विवाद/ रोल प्ले/ मौखिक परीक्षा/ समूह चर्चा/ दृश्य अभिव्यक्ति/ इंटरैक्टिव बुलेटिन बोर्ड/ गैलरी वॉक/ एग्जिट कार्ड/ अवधारणा मानचित्र/ सहपाठी आकलन / कला समेकन/ स्व- आकलन / प्रौद्योगिकी का समावेशन आदि।	• स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं के लिए वैश्वीकरण के निहितार्थ का विश्लेषण करते हैं। • विभिन्न सामाजिक समूहों द्वारा वैश्वीकरण को अलग-अलग तरीके से अनुभव पर चर्चा करते हैं। • अर्थव्यवस्था की जीवन रेखा के रूप में परिवहन के कार्यों की गणना करते हैं। • सांस्कृतिक/ राजनीतिक/ सामाजिक/ आर्थिक पहलुओं के संदर्भ में वैश्वीकरण के विभिन्न आयामों को संघटित करते हैं।	• अध्यापक/ अध्यापिका के मार्गदर्शन में विद्यालय में अप्रैल और सितंबर के महीने के बीच अंतविषयी परियोजना पूर्ण करना है। (परियोजना कार्य को गृह कार्य के रूप में देने से पूरी तरह से बचना है।)
विश्वाई समकालीन भारत-I: अध्याय 7	राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ			
आर्थिक विकास की समझ: अध्याय 4	वैश्वीकरण एवं भारतीय अर्थव्यवस्था			

दिशानिर्देश:

• दो या अधिक विषयों को एक गतिविधि में अधिक सुसंगत और एकीकृतरूप से जोड़ना शामिल है। आम तौर पर मान्यता प्राप्त विषय- अर्थशास्त्र, इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान हैं, एक नमूना योजना संलग्न की गई है। कृपया नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करे

• कार्यप्रणाली (आईडीपी के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए एक उदहारणार्थ अंतर्विषयी परियोजना लिंक प्रदान किया गया है।

• विषय: भूमंडलीकृत विश्व का बनना, वैश्वीकरण एवं भारतीय अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएं

https://docs.google.com/document/d/1dlwwFeaSrExJHMtkzcEuoq3ehh-7FtHM/edit

अथवा

निर्देश:

उद्देश्यों एवं परिणामों का चयन करते समय तार्किकता तथा विशिष्ट उद्देश्यों को स्थानीय संदर्भों में ध्यान में रखने की आवश्यकता है।

परियोजना की रुपरेखा: नीचे एक 10 दिनों की सुझावात्मक योजना दी गई है जिसका पालन किया जा सकता है या आप नीचे दिए गए प्रारूप के आधार पर स्वयं बना सकते हैं।

प्रक्रिया:

- छात्रों के बीच प्रारंभिक सहयोग द्वारा उनकी भूमिकाओं, एकीकरण के क्षेत्रों, जांच और विश्लेषण के क्षेत्र की व्यवस्था करना

टीम लीडर: मुख्य सहयोगी
टीम के सदस्य:
नोट: शिक्षक विद्यार्थियों की क्षमताओं के अनुसार भूमिकाएँ आवंटित करें।

- दिए गए पाठ्यक्रम के आधार पर नीचे दिए गए प्रारूप के अनुसार 10-दिन की योजना जमा करना।
- मूल्यांकन योजना: आयामों का शिक्षक द्वारा स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाना है।
- नीचे दिए गए प्रारूप के अनुसार रिपोर्ट, पोस्टर और वीडियो पावती: स्वविचारों का प्रस्तुतीकरण और आभार की अभिव्यक्ति

कक्षा X: 10 दिवसीय अंतर्विषयी परियोजना का सुझावात्मक योजना

दिन 1: अंतर्विषयी परियोजना का परिचय और संदर्भ की स्थापना:
शिक्षकों द्वारा दी जाने वाली परियोजना और उसके उद्देश्यों का संक्षिप्त विवरण।
इतिहास विषय के अध्यापक/ अध्यापिकाओं द्वारा द्वितीय विश्व युद्ध के ऐतिहासिक संदर्भ और उसके परिणाम को पूछताछ विधि के माध्यम से प्रस्तुत करना।
विद्यार्थियों को वैश्विक अर्थव्यवस्था पर द्वितीय विश्व युद्ध के प्रभावों पर चर्चा करने के लिए समूह बनाएं। (मूल्यांकन के विभिन्न आयामों के लिए शिक्षक अनुलग्नक VIदेखें)
दिन 2: महामंदी
दिए गए लिंक के माध्यम से वीड़ियों देखें–

https://www.youtube.com/watch?v=62DxELjuRec	
https://www.youtube.com/watch?v=gqx2E5qIV9s	

महामंदी के कारणों एवं परिणामों और महामंदी के बड़े पैमाने पर उत्पादन और खपत की भूमिका पर चर्चा कीजिए। वैश्विक अर्थव्यवस्था पर महामंदी के परिणामों पर एक समूह पीपीटी/रिपोर्ट प्रस्तुत कीजिए।

तीसरा दिन: भारत और महामंदी

विद्यार्थी महामंदी के दौरान भारत की आर्थिक स्थिति से संबंधित सामग्री एकत्र करें और इसे भारत और अमेरिका की वर्तमान आर्थिक स्थिति से संबंधित करें। विद्यार्थी पुस्तकालय में जाकर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

एक समूह गतिविधि के रूप में उन्हें अपने निष्कर्षों का एक कोलाज प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। (मूल्यांकन के विभिन्न आयामों के लिए शिक्षक अनुलग्नक VI देखें)

चौथा दिन: विश्व अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण और देशों के बीच उत्पादन को जोड़ना

- छात्रों को समूहों में बैठाने के लिए शिक्षक जिग शॉ विधि का उपयोग करें तथा प्रत्येक समूह को अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण के लिए की गई प्रक्रिया और कैसे देशों में उत्पादन को आपस में जोड़ा जाए इसके बारे में जानकारी देते हुए हैंडआउट का एक हिस्सा दें। विभिन्न समूहों में जाकर जानकारी को संकलित करने के लिए समूह बनाएं।
- उन्हें युद्ध के बाद के पुनर्निर्माण के प्रयासों और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर उनके प्रभाव पर चर्चा करवाएँ।

विश्व अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण में ब्रेटन वुड्स संस्थानों की भूमिका का अध्ययन करें और कला एकीकृत परियोजना के माध्यम से उनकी शिक्षाओं को प्रस्तुत करें। (मूल्यांकन के विभिन्न आयामों के लिए शिक्षक अनुलग्नक VIदेखें)

पाँचवा दिन : प्रारंभिक युद्ध के बाद के वर्ष: राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के निर्माण में सड़क मार्ग, रेलवे, जलमार्ग और वायुमार्ग की भूमिका

- अध्यापक/ अध्यापिका नीचे दिए गए हैंडआउट 1 को समूहों में वितरित करता है और उन्हें हैंड आउट के अंत में पूछे गए पाँचवाप्रश्नों के उत्तर खोजने और कैफे वार्तालाप मोड का उपयोग करके समूहों में प्रस्तुत करने के लिए कहता है। आयामों के लिए अनुबंध III देखें।
- युद्ध के बाद के शुरुआती वर्षों में विश्व के सामने आने वाली चुनौतियों का अध्ययन कीजिए।
- राष्ट्रों के विऔपनिवेशीकरण और स्वतंत्रता की दिशा में किए गए प्रयासों पर चर्चा कीजिए।

छठा दिन: युद्ध के बाद का समझौता और ब्रेटन वुड्स संस्थान

- छात्रों को https://en.wikipedia.org/wiki/Bretton_Woods_system अथवा

में दी गई सामग्री को पढ़ने को कहें और युद्ध के बाद की अर्थव्यवस्था में ब्रेटन वुड्स संस्थानों के प्रभाव पर बहस करें। (मूल्यांकन के विभिन्न आयामों के लिए शिक्षक अनुलग्नक VI देखें)

सातवा दिन: विऔपनिवेशीकरण और स्वतंत्रता - विश्व व्यापार संगठन की भूमिका:

छात्र नीचे दिए गए हैंडआउट 2 को पढ़ेंगे और नए राष्ट्रों के निर्माण में विश्व व्यापार संगठन द्वारा प्रदान किए गए समर्थन का रोल प्ले प्रस्तुत करेंगे। (मूल्यांकन के विभिन्न आयामों के लिए शिक्षक अनुलग्नक VI देखें)

- विश्व व्यापार संगठन का परिचय

- निष्पक्ष व्यापार प्रथाओं को बढ़ावा देने में विश्व व्यापार संगठन की भूमिका का अध्ययन करें

आठ्वा दिन: ब्रेटन वुड्स का अंत और वैश्वीकरण की शुरुआत:
छात्र लिंक में दी गई सामग्री को पढ़ेंगे

https://www.imf.org/external/about/histend.htm#:~:text=End%20of%20Bretton%20Woods%20system,-The%20system%20dissolved&text=In%20August%201971%2C%20U.S.%20President,the%20breakdown%20of%20the%20system.
अथवा

- एक वित्तीय विशेषज्ञ/ अर्थशास्त्री/ व्याख्याता/ प्रोफेसर के साथ एक साक्षात्कार आयोजित करें। एकत्र की गई जानकारी के आधार पर, छात्र निष्कर्षों पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत कर सकते हैं।
- ब्रेटन वुड्स प्रणाली के अंत के कारणों पर चर्चा करें।

नौवा दिन: भारत में वैश्वीकरण का प्रभाव और जलमार्ग और वायुमार्ग की भूमिका

https://www.jagranjosh.com/general-knowledge/new-economic-policy-of-1991-objectives-features-and-impacts-1448348633-1
अथवा

- छात्र उपरोक्त लिंक में दी गई सामग्री को पढ़ेंगे, और एक रिपोर्ट तैयार करेंगे कि अगर यह स्टैंड नहीं लिया गया होता तो भारत का क्या होता और इसे रेडियो टॉक शो के रूप में प्रस्तुत कर सकते है। वे वैश्वीकरण में भारत की उपलब्धि में जलमार्ग और वायुमार्ग की भूमिका को जोड़ेंगे।
- भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन करें।
- वैश्वीकरण की प्रक्रिया में भारत के सामने आने वाली चुनौतियों पर चर्चा करें।

दिन 10. अंतिम प्रस्तुति

- अंतर्विषयी परियोजना को पूरा करें और मुख्य बातों को सारांशित करें।

दसवीं कक्षा की अंतर्विषयी परियोजना के

दिन 4 के लिए हैंडआउट-1

हैंडआउट शीर्षक: द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व और भारत में जलमार्ग और वायुमार्ग की भूमिका

परिचय: द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद विश्व को महत्वपूर्ण आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों का सामना करना पड़ा। युद्ध के बाद के विश्व और भारत को आकार देने में जलमार्ग और वायुमार्ग की भूमिका को समझना महत्वपूर्ण है। इस हैंडआउट में हम वैश्विक अर्थव्यवस्था पर जलमार्गों और वायुमार्गों के प्रभाव और इसने भारत के विकास में किस प्रकार मदद की, इस पर चर्चा करेंगे।

जलमार्ग: द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के युग में, जलमार्गों ने माल और लोगों की आवाजाही में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बंदरगाहों और जलमार्गों के सुधार ने माल के अधिक कुशलतापूर्वक परिवहन की अनुमति दी और आर्थिक विकास को गति देने में मदद की।
नौवहन प्रौद्योगिकियों के विकास के साथ-साथ वस्तुओं और सेवाओं की बढ़ती मांग ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को विस्तार दिया। इसने विश्व अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में मदद की और भारत सहित कई देशों में उद्योगों के विकास की अनुमति दी।
भारत में, जलमार्गों और बंदरगाहों के विकास ने देश की अर्थव्यवस्था को सुधारने में मदद की। देश की लंबी तटरेखा और कई नदियों ने इसे माल के परिवहन के लिए एक आदर्श स्थान बना दिया। भारत में बंदरगाहों और जलमार्गों के विकास ने देश के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में माल की आवाजाही की अनुमति दी, जिससे आर्थिक विकास और विकास को बढ़ावा मिला।

वायुमार्ग: द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, हवाई परिवहन के विकास ने विश्व की अर्थव्यवस्था में क्रांति ला दी। हवाई यात्रा के विस्तार ने माल और लोगों के तेज और अधिक कुशल परिवहन की अनुमति दी, जिसने विश्व अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में मदद की।
भारत में, वायुमार्ग के विकास ने देश के विभिन्न भागों को जोड़ने में मदद की और लोगों और सामानों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में आसानी हुई। इससे भारत में आर्थिक विकास और विकास को गति देने में मदद मिली।
भारत में हवाई परिवहन की वृद्धि ने भी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के विस्तार की अनुमति दी। भारतीय व्यवसाय अब आसानी से विदेशी बाजारों तक पहुंच सकते थे, जिससे देश की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में मदद मिली।

निष्कर्ष:
द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की विश्व और भारत में जलमार्ग और वायुमार्ग की भूमिका इन देशों के आर्थिक और सामाजिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण थी। इन परिवहन साधनों के विकास ने आर्थिक विकास को गति देने में मदद की और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के विस्तार की अनुमति दी। विश्व और भारत पर जलमार्गों और वायुमार्गों के प्रभाव को समझना द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हुए आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों को समझने में महत्वपूर्ण है।

प्रश्न:
1. आयात और निर्यात में प्रमुख बंदरगाहों की भूमिका का उल्लेख कीजिए।
2. दक्कन एयरवेज के उद्भव ने घरेलू वायुमार्गों की संपूर्ण कार्यक्षमता को बदल दिया। कथन की पुष्टि कीजिए।
3. जलमार्ग और वायुमार्ग भारत के आर्थिक विकास में योगदान करते हैं। अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए।

दसवीं कक्षा की अंतर्विषयी परियोजना के

दिन 7 के लिए हैंडआउट 2

हैंडआउट शीर्षक: उपनिवेशवाद के बाद नए राष्ट्रों के निर्माण में विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) की भूमिका

परिचय: उपनिवेशवाद की समाप्ति के बाद, कई देशों को महत्वपूर्ण आर्थिक और राजनीतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा क्योंकि उन्होंने खुद को स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के लिए काम किया। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) ने इन देशों को अपनी अर्थव्यवस्थाओं के पुनर्निर्माण और वैश्विक अर्थव्यवस्था में भाग लेने में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस हैंडआउट में, हम उपनिवेशीकरण के बाद नए राष्ट्रों के निर्माण में विश्व व्यापार संगठन की भूमिका पर चर्चा करेंगे।

विश्व व्यापार संगठन क्या है?

विश्व व्यापार संगठन एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है जिसे 1995 में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देने और देशों को वैश्विक अर्थव्यवस्था में भाग लेने में मदद करने के लिए स्थापित किया गया था।

विश्व व्यापार संगठन देशों को बातचीत करने और अंतरराष्ट्रीय व्यापार समझौतों को लागू करने के लिए एक मंच प्रदान करता है, और यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि व्यापार निष्पक्ष और अनुमानित तरीके से आयोजित किया जाता है। संगठन देशों को उनकी व्यापार नीतियों में सुधार करने और वैश्विक अर्थव्यवस्था में भाग लेने में मदद करने के लिए तकनीकी सहायता और सलाह भी प्रदान करता है।

विश्व व्यापार संगठन ने उपनिवेशीकरण के बाद नए राष्ट्रों की मदद कैसे की है?

औपनिवेशिक शासन समाप्त होने के बाद कई देशों को महत्वपूर्ण आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा क्योंकि उन्होंने खुद को स्वतंत्र राष्ट्रों के रूप में स्थापित करने के लिए काम किया। विश्व व्यापार संगठन ने इन देशों को व्यापार वार्ताओं के लिए एक मंच प्रदान करके और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौतों को लागू करने में मदद करके वैश्विक अर्थव्यवस्था में भाग लेने में मदद की।

विश्व व्यापार संगठन ने इन देशों को अपनी व्यापार नीतियों में सुधार करने और वैश्विक अर्थव्यवस्था में भाग लेने में मदद करने के लिए तकनीकी सहायता और सलाह भी प्रदान की। इससे इन देशों में आर्थिक वृद्धि और विकास को गति देने में मदद मिली, और उन्हें वैश्विक अर्थव्यवस्था में और अधिक एकीकृत होने की अनुमति मिली।

वैश्विक अर्थव्यवस्था में भाग लेकर, उपनिवेशवाद के बाद के नए राष्ट्र अपने बाजारों का विस्तार करने, विदेशी निवेश को आकर्षित करने और अपने आर्थिक प्रदर्शन में सुधार करने में सक्षम थे। विश्व व्यापार संगठन ने इन देशों को अपनी अर्थव्यवस्थाओं का निर्माण करने और खुद को स्थिर, स्वतंत्र राष्ट्रों के रूप में स्थापित करने में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

निष्कर्ष:

विश्व व्यापार संगठन ने इन देशों को वैश्विक अर्थव्यवस्था में भाग लेने में मदद करके उपनिवेशवाद के बाद नए राष्ट्रों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संगठन की व्यापार वार्ता, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौतों के प्रवर्तन और तकनीकी सहायता ने इन देशों में आर्थिक विकास और विकास को गति देने में मदद की। उपनिवेशवाद के बाद नए राष्ट्रों के निर्माण में विश्व व्यापार संगठन की भूमिका को समझना औपनिवेशिक शासन की समाप्ति के बाद हुए आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों को समझने में महत्वपूर्ण है।

अनुलग्नक-V

छात्रों द्वारा प्रस्तुति प्रारूप - कक्षा IX और X

विद्यार्थी का नाम:	
समूह का नाम:	
कक्षा एवं अनुभाग:	**जमा करने की तिथि:**
आईडीपी का विषय:	
परियोजना का शीर्षक:	
उद्देश्य:	
मूल्यांकन के विभिन्न प्रकार: **सर्वेक्षण/साक्षात्कार/अनुसंधान कार्य/अवलोकन/कहानी आधारित प्रस्तुति/कला एकीकरण/प्रश्नोत्तरी/वाद-विवाद/रोल प्ले/वाइवा,/समूह चर्चा,/दृश्य अभिव्यक्ति/इंटरैक्टिव बुलेटिन बोर्ड/गैलरी वॉक/एग्जिट कार्ड/अवधारणा मानचित्र/पिएर मूल्यांकन/कला एकीकरण/स्व-मूल्यांकन/प्रौद्योगिकी का एकीकरण आदि।**	
साक्ष्य: तस्वीरें, साक्षात्कार के अंश, अवलोकन, वीडियो, अनुसंधान संदर्भ आदि।	
समग्र प्रस्तुतिः पीपीटी का लिंक, साझा दस्तावेज, स्कूल की सुविधा के अनुसार डिजिटल/हस्तलिखित हो सकते हैं।	
आभार	
संदर्भ (वेबसाइट, किताबें, समाचार पत्र आदि)	
प्रतिदर्शन/रिफ्लेक्सन	

<u>अनुलग्नक VI</u>

रुब्रिक/ आयाम	**निर्धारित अंक**
अनुसंधान कार्य	**1**
सहयोग और संचार	**1**
प्रस्तुति और सामग्री प्रासंगिकता	**1**
दक्षत। **• रचनात्मकता** **• विश्लेषणात्मक कौशल** **• मूल्यांकन** **• संश्लेषण करना**	**2**
कुल अंक	**5**

नोट: स्कूल कई उप-रूब्रिक दे सकते हैं और अंकों का कुल मान 5 अंक कर सकते हैं।

उदाहरण: सहयोग:- टीमवर्क/ भाषा प्रवाह/ टीम में योगदान/ लचीलापन आदि

अनुसंधान कार्य: - परख / पढ़ना और समझना/ संकलन करना आदि

संश्लेषण: - डेटा संग्रह/ डेटा मिलान आदि।